पाठ 11 रहीम के दोहे

पाठ - परिचय :- इस पाठ में रहीम के दोहे गये हैं। इन दोहों में नैतिकता, सज्जनता, सदाचरण आदि की शिक्षा दी गई है।

कठिन शब्दार्थ

पद 1. संपति = धन, दौलत।
सगे = अपने।
बनत = बन जाते हैं।
बहु = बहुत से।
बिपति = मुसीबत।
कसौटी = परखना।
साँचे = सच्चे।
मीत = मित्र।

पद 2 जल = पानी
जात बहि = बह जाता है।
तजि = छोड़कर
मीनन = मछलियों का।
मोह = प्रेम।
नीर = जल
छाँडति = छोड़ना।
छोह = प्रेम।

पद 3. तरुवर = पेड़।
खात = खाते।
सरवर = तालाब
पियत = पीते।

पानी = पानी
परकाज = दूसरे के कार्य के लिए।
हित = भलाई।
संपत्ति = धन-दौलत।
सचाहिं = जोड़ते हैं।
सुजान = बुद्धिमान। सज्जन।
दोहे -4 थोथे = खोखले
क्वार = आश्विन का महीना।
घहरात = गहरान। उमड़कर आना।
निर्धन = गरीब।
पाछिली = पिछली।
5. रीत = नियम
सीत = सर्दी
घाम = गर्मी
मेह = वर्षा।
सहि = सहना।
त्यों = उसी प्रकार।
देह = शरीर।

दोहे से –

प्रश्न 1 पाठ में दिए गए दोहे की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करने वाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग-अलग लिखिए।
उत्तर 1. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
2. जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।

3. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
4. थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
5. धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।

~~व्याख्या~~ :- उपर्युक्त पंक्तियों में कथन को प्रमाणित करने के उदाहरण :-

1. बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥
मुसीबत के समय में जो मित्र हमारी सहायता करता है वही हमारा सच्चा मित्र होता है।
2. रहिमन मछरी नीर को तऊ न छाँडति छोह।
मछली जल से स्वाभाविक प्रेम करती है इसलिए उससे बिछुड़ते ही अपने प्राण त्याग देती है।
3. ~~रहिमन मछली नीर को, तऊ न छा~~ कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान॥
दूसरों की भलाई के लिए सज्जन धन का संचय करते हैं।
4. धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात॥
कई लोग गरीब हो जाने पर भी दिखावे हेतु अपनी अमीरी की बातें करते रहते हैं।
5. जैसे परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।
मनुष्य को समान रूप से ही सुख-दुःख सहने की शक्ति रखनी चाहिए।

प्र० 2. रहीम ने क्वार के मास में गरजने वाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं?

दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजने वाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर: दोहे में कथन के आधार पर हम यह कहना चाहेंगे कि सावन के बादल जल बरसाने की सामर्थ्य से युक्त होते हैं इसलिए ही वे गरजने के साथ-साथ बरसते भी हैं। वे दिखावा न करके परहित साधना भी करते हैं और धरती व जन मन को आनंदित करते हैं।

—×—

दोहों से आगे —

प्र० 1. नीचे दिए गए दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो उनके क्या लाभ होंगे? सोचिए और लिखिए।

(क) तरुवर फल ..... सज्जन॥

उत्तर: इस पंक्ति के माध्यम से रहीमजी ने यही कहना चाहा है कि पेड़ों और सरोवरों की तरह यदि हमारा स्वभाव भी परोपकारी बन जाए तो हमारे आस-पास का जन-जीवन भी सुखी हो जाएगा। लोगों के मध्य फैली कटुता, द्वेष और विषमता की भावना कम हो जाएगी और सद्भाव बढ़ेगा। निश्चित ही समाज और राष्ट्र का कल्याण होगा।

—×—

(ख) धरती की-सी ..... यह देह॥

उत्तर: रहीमजी ने इस पंक्ति के माध्यम से शिक्षा देनी चाही है कि मनुष्य को धरती की तरह ही सहनशील होना चाहिए। यदि हम इस सत्य को स्वीकार कर लें तो निश्चित ही जीवन में आने वाले सुख-दुःख को सहज रूप में स्वीकार

Scanned with CamScanner

कर जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

भाषा की बात :-

प्र० 1. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिन्दी रूप लिखिए।
जैसे - परे - पड़े (रे, ड़े)

बिपति	बादर
मछरी	सीत

उत्तर=

शब्द	शब्दों के हिन्दी रूप।
बिपति	विपत्ति
मछरी	मछली
बादर	बादल
सीत	शीत

प्र०2 नीचे दिए उदाहरण पढ़िए।
(क) बनत बहुत बहु रीत।
(ख) जाल परे जल जात बहि।
उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का प्रयोग कई बार किया गया है और दूसरी में 'ज' का प्रयोग। इस प्रकार बार-बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुन्दरता बढ़ जाती है। वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।
(क) तजि मीनन को मोह।
(ख) संपति - सचहिं सुजान।
(ग) रघुपति राघव राजा राम।

——xx——xx——

सप्रसंग व्याख्याएँ

(1) कहि रहीम संपति सगे ..... साँचे मीत ॥

कठिन शब्दार्थ

संपति = धन-दौलत।

सगे = अपने

बनत - बन जाते हैं।

बहु = बहुत से।

प्रसंग = यह दोहा 'रहीम के दोहे' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि रहीम हैं। कवि ने यहाँ सच्चे मित्र के संबंध में बताया है।

व्याख्या :- रहीमजी कहते हैं कि जब तक मनुष्य के पास धन-दौलत रहता है तब तक उसके साथ अनेक प्रकार के रिश्ते-नाते बनाने के लिए लोग कई प्रकार के ढोंग बनाते हैं। लेकिन जो लोग गरीब और मुसीबत के समय काम आते हैं, वही सच्चे मित्र होते हैं।

(2) जाल परे ..... छाँड़ति छोह।

कठिन शब्दार्थ

जल = पानी

जात बाहि = बह जाता है।

तजि = छोड़कर।

मीनन = (मछली) मछलियों का।

प्रसंग = यह दोहा 'रहीम के दोहे' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रहीम हैं। कवि ने यहाँ मछली और पानी के संबंधों के बारे में बताया है।

Scanned with CamScanner

व्याख्या :- रहीम कहते हैं कि पानी में जाल डालने पर मछली तो जाल में फँस जाती है लेकिन पानी बहकर आगे निकल जाता है। लेकिन मछली तो जल से प्रेम करती है, उसका बिछोह होने पर मछली तड़प-तड़प कर प्राण त्याग देती है, परन्तु जल उसके प्रेम नहीं करता इसलिए वह मछली को जाल में छोड़कर बह जाता है।

(3) तरुवर फल नहीं ..... सज्जन धन

कठिन शब्दार्थ

तरुवर = पेड़
खात = खाते
सरवर = तालाब
पियत = पीते।
पान = जल/पानी

प्रसंग :- यह दोहा 'रहिम के दोहे' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रहीमजी हैं। कवि ने यहाँ प्रकृति के परोपकारी स्वभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या :- रहीम कहते हैं कि दूसरों की भलाई के कारण ही वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाते हैं। तथा तालाब भी अपना जल स्वयं नहीं पीते हैं। ठीक इस प्रकार दूसरों के प्रति इस प्रकार की भावना रखने के कारण ही सज्जन व्यक्ति धन जोड़ते हैं।

(4) थोथे बादर क्वार के ..... पाछिली बात।

कठिन शब्दार्थ

थोथे = खोखले
क्वार = आश्विन का महीना।
घहरात = गहराना।
निर्धन = गरीब
पाछिली = पिछली।

प्रसंग :- यह दोहा 'रहीम के दोहे' शीर्षक पाठ से लिया गया है इसमें कवि रहीमजी ने बतलाया है कि समय बदल जाने पर भी कुछ लोग शेखीली बातें करने की आदत नहीं छोड़ पाते हैं।

व्याख्या :- रहीम कहते हैं कि ज्ञानी पुरुष निर्धन हो जाने पर भी अपनी पड़ी हुई अमीरी की आदत नहीं छोड़ते हैं और अपने उन दिनों की बड़बोलने की बातें ठीक उसी प्रकार से करते हैं जैसे क्वार माह के जलहीन बादल उमड़ घुमड़ कर आते हैं लेकिन बरसते नहीं हैं।

---

(5) धरती की सी रीत है ..... यह देह ॥

कठिन शब्दार्थ :

रीत = नियम
सीत = सर्दी
घाम = गर्मी
मेह = वर्षा
सहि = सहना।
त्यों = उसी प्रकार।
देह = शरीर

प्रसंग :- यह दोहा 'रहीम के दोहे' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रहीमजी हैं। कवि ने यहाँ धरती और मनुष्य के शरीर की सहनशीलता की तुलना की है।

व्याख्या :- रहीम कहते हैं कि धरती सभी ऋतुओं सर्दी, गर्मी और वर्षा को बराबर रूप से सहती है। वैसे ही इस मानव शरीर को भी जीवन में प्राप्त सुखों और दुःखों को समान रूप से सहन करना चाहिए।

—x—

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न :-

प्र० 1. धन-दौलत होने पर बहुत से लोग बन जाते हैं—
(क) मित्र (ख) शत्रु (ग) संबंधी (घ) परिवारी। (क)

—x—

प्र० 2. सच्चे मित्र की परख होती है —
(क) सुख के समय (ख) विपत्ति के समय
(ग) तीज-त्योहार पर (घ) समारोह में। (ख)

—x—

प्र० 3. सज्जन पुरुष संपत्ति का संग्रह करते हैं।
(क) सुख के लिए (ख) परहित के लिए
(ग) प्रशंसा पाने के लिए (घ) दूसरों पर रौब जमाने के लिए (ख)

—x—

प्र० 4. आश्विन महीने के बादल क्या करते हैं?
(क) केवल गरजते हैं (ख) केवल जल बरसाते हैं।
(ग) केवल घुमड़ते हैं (घ) केवल गरजते और बरसते हैं। (क)

—x—

प्र० (5) 'मेह' शब्द का अर्थ है -
(क) वर्षा (ख) बादल (ग) गर्मी (घ) घन। (क)

पाठ समाप्त